Ch 15 कपि करि हृदयँ विचार

शब्दार्थ :

सकल - सारी
मोहि - मुझे
जोरी - जोड़कर
तजौं - त्याग दूं
बेगि - बहुत जल्दी
दुसह - जो कठिनाई से सहन हो
बिरहु - विरह
काठ - लकड़ी
अनल - आग
प्रतिकूला - विरुद्ध
सूला - शूल
पावकमय - आग से भरा
हतभागी - भाग्यहीन
भभ - मेरा
बिटप असोका - अशोक-वृक्ष
नूतन - नया
कपिहिं - वानर
मुद्रिका - अँगूठी
बरने - वर्णन करना
सुनतहिं - सुनते ही
आदिहु - आरम्भ से
बिसमय - आश्चर्य
सहिदानी - निशानी
बानरहिं - बंदर

Scanned with CamScanner

मौखिक के Q.क, ख, ग H.W. हैं।

घ. आकाश में चाँद तारों को देखकर सीता जी ने क्या सोचा ?

- अशोक वृक्ष के नीचे बैठी हुई सीता जी की नजर चाँद तारों पर पड़ी, उन्हे देखकर वह सोचने लगी कि कोई तारा टूटकर पृथ्वी पर क्यों नहीं आ जाता जिससे उन्हें अग्नि मिल सके। चन्द्रमा भी आग से भरा है, पर वह भी मुझे भाग्यहीन समझ कर मेरी सहायता नहीं कर रहा।

ङ. सीता जी के संकोच को जानकर हनुमान जी ने क्या किया ?

- सीता जी के संकोच को जानकर हनुमान जी ने मुद्रिका को पेड़ के नीचे गिरा दिया और कहा कि जानकी माता मैं राम का दूत हूँ और राम की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि यह अंगूठी निशानी के रूप में श्री राम ने आपको देने को कहा है।

लिखित !

क. सीता जी ने त्रिजटा से क्या निवेदन किया ?

- सीता जी ने त्रिजटा से निवेदन किया कि तुम मेरी विपत्ति की साथिन हो। बहुत दिन बीतने पर भी श्री राम ने मेरी सुधि नही ली। मैं

Scanned with CamScanner

अग्नि में जल कर उनके प्रति अपने सच्चे प्रेम को प्रमाणित करना चाहती हूँ। अतः मेरे लिए अग्नि का प्रबन्ध कर मेरे दुख को दूर करें। श्री राम के वियोग का कष्ट अब असहनीय हो गया है।

ख. त्रिजटा सीता जी को क्या समझा रही थी ?

– त्रिजटा जो कि अशोक वाटिका में सीता जी की देखरेख करती थी, उसने सीता जी की बैचेनी को देखा और उन्हें समझाया कि श्री राम आपको लेने अवश्य आएंगे इसलिए आप प्राण त्यागने का विचार त्याग दें। आपने मुझे आग लाने के विषय में कहा है पर रात्रि के समय कहीं भी अग्नि प्राप्त नहीं होगी। आप निश्चिंत हो कर सो जाइए और यह कहकर वह अपने महल में चली गई।

ग → सीता जी की अवस्था देखकर हनुमान जी को कैसा लगा ?

– अशोक वृक्ष पर बैठे हनुमान जी सीता जी की बैचेनी देखकर विकल हो रहे थे। उनका एक एक क्षण कल्प की तरह बीता रहा था। वे जल्दी से जल्दी माता सीता के दुख को दूर करना चाहते थे।

घ. → हनुमान जी ने अँगूठी कब कहाँ और क्यों गिराई ?

– अशोक वृक्ष के नीचे बैठी सीता बहुत व्याकुल हैं, वे सभी से आग्रह कर रही है कि कोई उनको अग्नि लाकर दे। उचित समय जानकर अशोक वृक्ष

अशोक वृक्ष पर बैठे हनुमान जी ने भगवान राम की मुद्रिका नीचे गिरा दी, जिसपर राम नाम अंकित था। उस मुद्रिका को वहाँ पा सीता जी विस्मित और चकित थीं।

प्र.→ अँगूठी देखकर सीता जी के मन में क्या क्या विचार उठे ?

— हनुमान जी ने जैसे ही अँगूठी नीचे गिराई सीता जी ने सोचा अशोक वृक्ष में कोई सगारा गिरा दिया है। उन्होंने उसे उठाया तो वह राम की मुद्रिका थी। अँगूठी देखकर उनके अंदर हर्ष और विषाद के मिश्रित भाव जागृत हुए। वह सोचने लगी कहीं यह मुद्रिका मायावी तो नहीं ? तभी उनके मन में विचार आया कि राम तो अजय हैं उनके साथ कोई भी छल नहीं कर सकता।

भाव स्पष्ट कीजिए

(i) सत्य नाम करु हरु मम सोका।

— प्रस्तुत पंक्ति सीता जी ने अशोक वृक्ष से कही है कि हे अशोक वृक्ष तुम शोक हरने वाले वृक्ष हो मेरे शोक को भी हरकर अपने नाम को चरितार्थ करो।

(ii) फिर बैठी मन विस्मय भयऊ।

— हनुमान जी जब अशोक वृक्ष से उतरकर सीता जी के निकट आए तो इन्हे देखकर सीता आश्चर्य-चकित हो गई मन ही मन सोचने लगी कि एक कपि और मनुष्य की दोस्ती किस प्रकार संभव है।

Scanned with CamScanner

(iii) जाना मन कर्म वचन यह कृपासिंधु कर दास।
– हनुमान जी को देखते ही सीता जी के मन में संशय हुआ। उनके संशय को दूर करने के लिए हनुमान जी ने आदि से अंत तक की राम कथा सीता जी को सुनाई। अब सीता जी को विश्वास हो गया कि हनुमान जी मन, कर्म, वचन से भगवान श्री राम के भक्त और दास हैं। इस प्रकार उनका संशय दूर हो गया।

भाषा से

निम्नलिखित शब्दों के दो दो पर्यायवाची शब्द लिखिए –

1. पावक – आग, अग्नि शशि – चन्द्रमा, चन्दा
   हृदय – दिल, मन विषाद – दुख, कष्ट
   माता – माँ, महतारी
2. नहीं है X
3. समान तुकवाले शब्द लिखिए –
   जोरी – मोरी सोच – पोच
   पहिचानी – अकुलानी गयऊ – भयऊ
   समाना – बिदाना
   मनोहर – घरोहर
   बनाई – लगाई
   कैसे – जैसे

Scanned with CamScanner

4. 'इत' प्रत्यय लगाकर शब्द बनाइए —

कथन - कथित चिंता - चिन्तित
आनंद - आनंदित पठन - पठित
रच - रचित वर्णन - वर्णित
अर्पण - अर्पित प्रफुल्ल - प्रफुल्लित

5. वर्ण-विच्छेद कीजिए —

1. मारिहि - म् + आ + र् + इ + ह् + इ
2. त्रिजटा - त् + र् + इ + ज् + अ + ट् + आ
3. श्रवन - श् + र् + अ + व् + अ + न् + अ
4. प्रतिकूल - प् + र् + अ + त् + इ + क् + ऊ + ल् + अ
5. मुद्रिका - म् + उ + द् + र् + इ + क् + आ

Q6, Q7 नहीं हैं।

8. निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया-विशेषण छाँटि

1. वह ध्यानपूर्वक पुस्तक पढ़ रहा है।
2. वह कल अवश्य आएगा।
3. अंदर मत जाओ।
4. सोहन दिनभर लिखता ही रहा।
5. कल लगातार बारिश होती रही।
6. कछुआ धीरे-धीरे चलता है।
7. राधा रोज संगीत सीखती है।
8. थोड़ा आराम कर लो।

H.W.

आप अपने विपत्तिग्रस्त (मुसीबत में पड़े) मि

Scanned with CamScanner